जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जैनपथप्रदर्शक के सभी सहृदय पाठकों, संवाद-दाताओं एवं अन्य सभी सहयोगियों को नववर्ष के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनायें।

वर्ष : 24 | जनवरी (प्रथम) 2002 | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अंक : 17 | सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

भ. महावीर के जन्मोत्सव पर अनेक योजनायें

भगवान महावीर के 2600 वें जन्मकल्याणक महोत्सव के सम्बन्ध में देश और विदेश में व्यापक कार्यक्रमों के आयोजन हो रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर प्रधानमंत्री श्री अटलविहारी बाजपेयी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय समिति कार्य कर रही है।

समग्र जैनसमाज की दृष्टि से केन्द्रीय स्तर पर श्री दीपचन्दजी गार्डी एवं श्रीमती इन्दु जैन के नेतृत्व में भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव महासमिति काम कर रही है।

उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, आसाम, गुजरात, दिल्ली, गोवा, कर्नाटक, पंजाब, उत्तरांचल, आन्ध्रप्रदेश, नागालैण्ड, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं हरियाणा की राज्य सरकारों ने मुख्यमंत्री महोदय की अध्यक्षता में राज्य समितियों का गठन किया है। आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री एन. चन्द्रबाबू नायडू ने 3600 एकड़ जमीन में महावीर वनस्थली बनाने की योजना भेजी है।

प्रधानमंत्रीजी की अध्यक्षता में गठित राष्ट्रीय समिति के निर्णयों के अनुसार भगवान महावीर के 2600 वें जन्मकल्याणक महोत्सव की आयोजना के लिये 100 करोड़ रुपये की राशि की बजट व्यवस्था संस्कृति मंत्रालय को प्राप्त हो गई है। राष्ट्रीय समिति में लिये गये निर्णयों के अनुसार अब भगवान महावीर वनस्थली, जैन एवं प्राकृत अध्ययन, जैन पाण्डुलिपि भण्डार का राष्ट्रीय रजिस्टर, विश्वस्तर की जैन प्रदर्शनियों की आयोजना, वैशाली जिले में एवं पावापुरी में निर्माण कार्य तथा जैन तीर्थस्थलों के रख-रखाव के सम्बन्ध में खर्च की बजट व्यवस्था किये जाने पर संस्कृति मंत्रालय कार्यवाही कर रहा है।

भगवान महावीर के 2600 वें जन्मोत्सव की स्मृति में 5 रुपये के सिक्के तैयार हो गये हैं। उनकी स्मृतिस्वरूप 100 रुपये के सिक्के का भी विमोचन होगा; किन्तु 100 रुपये के सिक्के मुद्रा बाजार में नहीं होंगे। मुद्रा बाजार में 5 रुपये के सिक्कों का ही चलन होगा।

पंजाब सरकार 10 ग्राम के सोने के सिक्के तथा 50 ग्राम के चांदी के सिक्के निकाल रही है। इनका विमोचन भी प्रधानमंत्रीजी के करकमलों से होने की संभावना है। **-एल.एल.आच्छा**

डॉ. भारिल्ल रेडियो पर

ऑल इण्डिया रेडियो अहमदाबाद-बरौडा स्टेशन से गुरुवार, दिनांक 3 जनवरी 2002 को दिन में 3 से 3.30 बजे के बीच हिन्दी पत्रिका कार्यक्रम के अन्तर्गत **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर** की शाकाहार विषय पर एक वार्ता प्रसारित की जायेगी, जो मीडियम वेब 354.6 एम. टी. एस. - 846 के. एच. जेड. पर सुनी जा सकेगी।

पंचकल्याणक महोत्सव सानन्द सम्पन्न

गुना (म.प्र.) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में 29 नवम्बर से 5 दिसम्बर तक श्री 1008 नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब पंच-कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर लब्धप्रतिष्ठित विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर एवं डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी के प्रवचनों से महती धर्मप्रभावना हुई। इसके अलावा ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल' ललितपुर, डॉ. योगेशजी अलीगढ़ एवं श्री चन्दूभाई फतेपुर के भी व्याख्यानों का लाभ मिला।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के साथ पं. अभयकुमारजी शास्त्री, पं. ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पं. मधुकरजी जलगाँव एवं पं. सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़ ने सम्पन्न कराये।

29 नवम्बर को प्रतिष्ठास्थल में श्री रतनचन्द प्रदीपकुमारजी चौधरी पिपरईवालों ने ध्वजारोहण किया। प्रतिष्ठामण्डप का उद्घाटन श्री सूरजमलजी पाटनी गुना ने किया। महोत्सव में श्री महावीर पंचकल्याणक व याग मण्डल विधान एवं इन्द्रसभा-राजसभा ने सभी को आकर्षित किया।

1 दिसम्बर को घटयात्रा का विशाल जुलूस नगर से होता हुआ श्री वर्धमान जिनालय पहुँचा। 2 दिसम्बर को जन्मकल्याणक का विशाल जुलूस प्रताप छात्रावास के प्रांगण में स्थित पाण्डुक शिला पर पहुँचा जहाँ बाल तीर्थंकर का 1008 कलशों से जन्माभिषेक किया गया। रात्रि में मैनपुरी से आया विशाल काँच का पालना-झूला ने सभी को आकर्षित किया।

3 दिसम्बर को तपकल्याणक के अवसर पर दीक्षावन में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का संसार की असारता को दर्शानेवाला वैराग्यगर्भित प्रवचन हुआ। 4 दिसम्बर को केवलज्ञानकल्याणक की इन्द्रों द्वारा पूजन की गई। इसीदिन समवशरण रचना एवं दिव्यध्वनि का प्रसारण भी हुआ। रात्रि में डी.पी. कौशिक मु.नगर के द्वारा रंगारंग धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। 5 दिसम्बर को श्री कु.कु. कहान स्वाध्याय भवन का उद्घाटन स्व. डॉ. महावीर की मातेश्वरी श्रीमती शैलाबाई के द्वारा एवं श्री वर्द्धमान जिनालय का उद्घाटन श्री सागरमलजी गोयल द्वारा किया गया। शिखर पर विशाल स्वर्ण कलश श्री विरधीचन्द मथुराप्रसादजी मड़वैया परिवार ने एवं ध्वजदण्ड जैन जागृति महिला मण्डल ने विराजमान किया।

आयोजन में विभिन्न स्थानों से 7 हजार साधर्मी भाई-बहिनों ने पधारकर धर्मलाभ लिया। लगभग 1 लाख रुपये का सत्साहित्य एवं 15 हजार रुपये के प्रवचनों के कैसिट्स घर-घर पहुँचे। सम्पूर्ण आयोजन पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा जयपुर एवं पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया के निर्देशन में आशातीत सफलता के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

कहान सन्देश

मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान

(सम्यग्दर्शन पुस्तक के आधार से)

(91 वीं किस्त)

(गतांक से आगे .....)

श्री सीमंधरस्वामी आजकल महाविदेहक्षेत्र में समवशरण में विराजमान हैं, वे तीर्थंकररूप से विचरण करते हैं। 500 धनुष की उनकी देह है। उनके समशरण में गणधर विराजते हैं और भगवान की दिव्यवाणी सुनकर दो घड़ी में बारह अंगों की रचना कर सकें – ऐसी उनकी अपार सामर्थ्य है। तीर्थंकर भगवान अर्थात् धर्म के राजा और गणधरदेव अर्थात् धर्म के दीवान ह्न ऐसे गणधरदेव भी जब नमस्कार मंत्र बोलकर पंचपरमेष्ठी को भाव से नमस्कार करते हैं, तब वीतरागी आनन्द में झूलते सभी मुनिराज उसमें आ जाते हैं। अहो! गणधरदेव जिन्हें नमस्कार करें, उन संतों की दशा कैसी अलौकिक होती है ! उस मुनिपद की महिमा कितनी है प्रभु! मुनिराज भी पंचपरमेष्ठी हैं । ऐसे संत मुनिराज भी अत्यंत भवभीरु हैं और रागरहित नैष्कर्म्य परिणतिवाले हैं, बाहर के किसी काम का बोझा अपने माथे पर नहीं रखते हैं, अन्तर के आनन्द के अनुभव में ही उनकी परिणति लीन है ह्न ऐसे संत शुद्धरत्नत्रय की भक्ति–आराधना करते हैं । अन्तर में शुद्धरत्नत्रय की आराधना हो और बाह्य में निष्परिग्रही वीतरागी मुद्रा हो ह्न ऐसी मुनि की दशा होती है।

इसीप्रकार श्रावक तथा श्रमण दोनों शुद्धरत्नत्रय की भक्ति करते हैं । शुद्धरत्नत्रय की भक्ति में स्वभाव का ही आश्रय है, पर का अथवा राग का आश्रय नहीं है। श्रावक को भी सम्यक् श्रद्धा, ज्ञानपूर्वक आंशिकरूप से जितना वीतरागी चारित्र प्रगट हुआ है, उतनी रत्नत्रय की भक्ति है। मुनिराज को पंच महाव्रत आदि जो शुभराग है, वह तो आस्रव है, वह कोई मुनिपद नहीं है। मुनिपद तो संवर–निर्जरा रूप दशा है और वह दशा चैतन्यस्वभाव के आश्रय से ही प्रगट होती है । उसे ही यहाँ आचार्यदेव निर्वाण की भक्ति कहते हैं और ऐसी भक्ति से ही मुक्ति की प्राप्ति होती है।

अहो! नियमसार में तो संतों ने अमृत के दरिया को उछाला है।

शुद्धरत्नत्रय की भक्ति करनेवाले श्रावकों को तथा परम तपोधनों को जिनवरों के द्वारा कही गई निर्वाण भक्ति अर्थात् कि अपुनर्भवरूपी स्त्री की सेवा वर्तती है। अपुनर्भव अर्थात् मोक्ष, उसकी आराधना उन्हें वर्तती है। ऐसा तत्त्व समझे बिना बाहर में छोड़ो–छोड़ो ऐसा करता है, उससे कोई श्रावकपना या मुनिपना नहीं आता है । आत्मा में अन्तर्मुख होकर जो शुद्धरत्नत्रय की आराधना करता है, उसे ही श्रावकपना और मुनिपना होता है तथा वही मोक्ष की वास्तविक क्रिया है। शरीर की क्रिया तो जड़ की है और राग की क्रिया तो आस्रव है; परन्तु आत्मस्वभाव के आश्रय से पर्याय पलटकर वीतरागी पर्याय हो जाना वह धार्मिक क्रिया है। श्रमण तथा श्रावकों को भी ऐसी क्रिया होती है; बीच में राग होता है, उसे वे धर्म की क्रिया नहीं मानते हैं, इसीप्रकार देहादि की क्रिया को भी वे अपनी नहीं मानते हैं। **(क्रमशः)**

सम्पादकीय

क्षत्रचूड़ामणि : एक परिशीलन

(गतांक से आगे.....)

जीवन्धर एकत्वभावना को विचारते हैं कि –

बन्धवो हि श्मशानान्ता, गृह एव अर्जितधनम्।
भस्मने गात्रमेकं त्वां, धर्म एव न मुचंति।।

इस संसार में धर्म ही एकमात्र ऐसा है जो जीव के परलोक के सुख का साथी होता है। पुण्योदय से प्राप्त शेष सब संयोग यहीं रह जाते हैं। जैसे कि – बन्धुगण श्मशान तक ही साथ देते हैं, धन घर में पड़ा रह जाता है और शरीर चिता की भस्म बनकर रह जाता है।

हे आत्मन् ! जब अकेला तू ही स्वयं कर्मों का भोक्ता और कर्मों का नाशक है तो स्वाधीनता से प्राप्त होनेवाली मुक्ति को या आत्मस्वभाव को प्राप्त करने का प्रयत्न क्यों नहीं करता ?

अन्यत्वभावना के स्वरूप का चिन्तन करते हुए महाराजा जीवन्धर सोचते हैं कि आत्मन् ! तू शरीर में आत्मबुद्धि कभी भी मत कर; क्योंकि यद्यपि कर्मोदय वश देह और आत्मा एकमेक हो रहे हैं; तथापि जैसे तलवार म्यान से जुदी रहती है, उसीप्रकार शरीर में रहते हुए भी तू शरीर से अलग है।

इसीप्रकार अशुचिभावना के माध्यम से शरीर की अशुचिता का विचार करते हैं कि – जिस शरीर के सम्पर्क से पवित्र वस्तुएँ भी अपवित्र हो जाती हैं तथा जो रजवीर्य आदि मलों से उत्पन्न होता है, वह शरीर पवित्र कैसे हो सकता है ?

हे आत्मन् ! मल–मूत्र और मांस का पिण्ड रूप यह शरीर यद्यपि नश्वर है; तथापि इस नश्वर मनुष्य पर्याय में हम अविनाशी मोक्ष–प्राप्ति का साधन कर सकते हैं; अतएव जबतक यह नष्ट नहीं हो जाता, तबतक मोक्षमार्ग को प्राप्त करने का उपाय कर लेना चाहिए।

जिसतरह ईख (गन्ना) का रस निकाल लेने पर उसे जला देने से हमें दुःख नहीं होता, इसीतरह हे आत्मन्! तू भी इस मनुष्य शरीर से मुक्ति की साधना का सार प्राप्त कर ! इस शरीर को निःसार बना दे, जिससे इसके जलाने में तुझे भी रंज न हो।

आस्रव और संवरभावना को भाते हुए जीवन्धरस्वामी आत्म सम्बोधन करते हैं कि – हे आत्मन्! तू तत्त्वज्ञान के अभ्यास से आस्रव के कारणभूत विकथा और कषायों से रहित होकर, धन–धान्यादि बाह्य पदार्थों से ममता त्याग दे तो तुझे व्रत, गुप्ति, समिति और तप आदि स्वतः हो जायेंगे।

इसीप्रकार सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र की आराधना से तेरे सम्पूर्ण संचित कर्म भी निर्जरित हो जायेंगे और तू बन्ध रहित होकर लोकांत में जाकर विराजमान हो जायेगा। (क्रमशः)

श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव,खनियांधाना

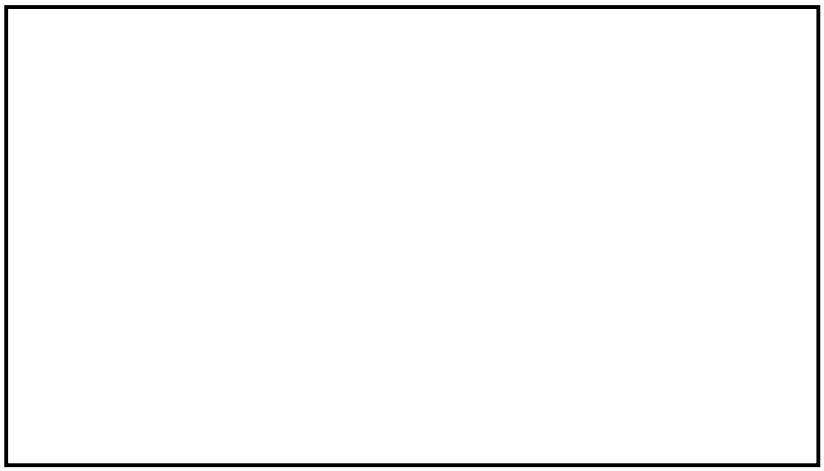

मंगलवार, दिनांक 19 फरवरी से सोमवार 25 फरवरी 2002 तक

अत्यंत आनंद एवं उल्लास के साथ सूचित करते हैं कि आध्यात्मिक धर्मनगरी खनियांधाना में निर्मित भारतवर्ष के अनुवम व अद्वितीय पंचमेरु नंदीश्वर जिनमंदिर में विराजमान होने वाले 164 अकृत्रिम जिनबिम्ब, अंतर्मुखी मनोज्ञ धवल पाषाण प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा हेतु श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव का आयोजन किया गया है। महोत्सव के विधिनायक 1008 श्री नेमिनाथ भगवान होंगे। आपसे विनम्र अनुरोध है कि दिगम्बर जैनधर्म के इस लोकोत्तर महायज्ञ में निजकल्याणार्थ सपरिवार तथा इष्ट मित्रोंसहित पधार कर धर्मलाभ लेकर लोकातीत जीवन का निर्माण करें।

विशिष्ट विद्वत्समागम	प्रतिष्ठाचार्य	निर्देशक
डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर **डॉ. उत्तमचन्दजी, सिवनी** **पण्डित विमलचंदजी झांझरी, उज्जैन** **ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना**	**बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, खनियांधाना** **सह-प्रतिष्ठाचार्य** **पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा**	**बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद** **सह-निर्देशक** **पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा** **पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया बिजौलिया**

संपर्क-सूत्र - श्री नन्दीश्वर दि. जिनमंदिर चेतनबाग, खनियांधाना, जिला - शिवपुरी 473990 (म.प्र.) फोन - (07497) 35474, 35450, फैक्स - 35539
नोट - आपके यहाँ से कितने भाई-बहिन पधार रहे हैं, इसकी सूचना अवश्य दें, जिससे आपके आवासादि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

पधारिये .. !

!! श्री मह

मुक्तिपंथ गजपंथ की पावन धरा पर भारत सरकार द्वारा घोषित अहिंस

गजपंथ सिद्धक्षेत्र आनंदीवन नन्दीश्वर आश्रम ट्रस्ट नासि

श्री 1008 महावीरस्वामी दि. जिनबि

(सोमवार, दिनांक 11 फरवरी से

कार्यक्रम स्थल : गजपंथ सिद्धक्षेत्र, चामरले

अत्यन्त आनन्द एवं उल्लास के साथ सूचित करते हैं कि संसारमुक्त सप्त बलभद्र एवं अष्ट करोड़ महावीरस्वामी दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन किया जा रहा है एवं धातु की प्रतिमायें पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक विराजमान की जायेंगी। महोत्सव के विधि-नायक लोकोत्तर महायज्ञ में निज कल्याणार्थ सपरिवार तथा इष्ट मित्रों सहित पधारकर एवं धर्मलाभ लेकर

विद्वत्समागम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर

डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी

प्रतिष्ठाचार्य

ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा

सह-प्रतिष्ठाचार्य

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा

पण्डित मधुकरजी जैन जलगाँव

पण्डित आलोककुमारजी शास्त्री कारंजा

पण्डित सुबोधकुमारजी शास्त्री शाहगढ़

पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री पिड़ावा

बाल

पंचर

रत्नज

स्वर्ण

रजत

यज्ञनायक
अनन्तराय
अमोलकचन्द शेठ मुम्बई

सौधर्म इन्द्र
कमलकुमार उमेदमल
बड़जात्या मुम्बई

कुबेर
शीतलचन्द
शान्तिलाल जैन

अध्यक्ष
एस. पी. जैन
मुम्बई

कार्याध्यक्ष
मुकुन्दभाई खार
मुम्बई

सम्पर्क-सूत्र : धन्यकुमार बेलोकर, कुन्दकुन्द भवन, प्रभातनगर, म्हसरूल, नासिक 422004 (म

आयोजक : भगवान महावीर पंचकल्याणक समिति, न

नोट – कृपया इस विज्ञापन को जहाँ से सब

ावीराय नमः !! अपूर्व धर्मलाभ लीजिये !!!

ा वर्ष में भगवान महावीर के 2600वें जन्मोत्सव के पावन अवसर पर

ाक अन्तर्गत मानवता की सुरक्षा हेतु विश्वशांति महायज्ञ

म्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

रविवार, 17 फरवरी 2002 तक)

णे पहाड़ (म्हसरूल) समीप नासिक (महा.)

अशरीरी सिद्धभगवंतों की पावन निर्वाणभूमि सिद्धक्षेत्र गजपंथ, नासिक (महा.) में श्री 1008
ह। इस अवसर पर वीतरागी-सर्वज्ञ जिनेन्द्र भगवंतों की अन्तर्मुखी भाववाही मनोज्ञ धवल पाषाण
क श्री1008 भगवान महावीरस्वामी होंगे। आपसे विनम्र अनुरोध है कि दिगम्बर जैनधर्म के इस
लोकातीत जीवन का निर्माण करें।

निर्देशक

बाल ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद
पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया जयपुर

तीर्थंकर का जन्माभिषेक कर निम्न पुण्यलाभ अवश्य लेवें

त्न कलश	11000/-	**महावीर कलश**	1100 /
जड़ित कलश	7000/--		
कलश	5000/-	**भावना कलश**	501/
कलश	2500/--		
		घटयात्रा (वेदी शुद्धि हेतु)	
		वंदना कलश	301/-

महामंत्री **मंत्री**

ा आमोदभाई कैलाशराव अभयकुमार
रतनचन्द मेहता नासिक रणदिवे मुम्बई

हा.) फोन - (0253) 530550, 531304

ासिक (महा.)

मांगलिक कार्यक्रम

11 फरवरी 2002 - जिनेन्द्र शोभायात्रा, ध्वजारोहण, महावीर विधान

12 फरवरी 2002 इन्द्रप्रतिष्ठा विधि, श्री याग मण्डल विधान, गर्भकल्याणक के 6 माह पूर्व इन्द्र व राजसभा।

13 फरवरी 2002 - **गर्भकल्याणक** - 16 स्वप्न फल, माता व अष्ट देवियों की मार्मिक तत्त्वचर्चा, जिनमंदिर में वेदी-कलश-ध्वजशुद्धि, शोभायात्रा।

14 फरवरी 2002 - **जन्मकल्याणक** - बालक वर्द्धमान के जन्म-कल्याणक पर इन्द्रों व राजाओं द्वारा आनंदवर्द्धक कार्यक्रम, 1008 स्वर्ण-रत्नमयी कलशों से जन्म अभिषेक व पालना-झूलन।

15 फरवरी 2002 - **तपकल्याणक** - लौकान्तिक देवों द्वारा कुमार वर्द्धमान के वैराग्य की अनुमोदना, मुनि दीक्षाविधि।

16 फरवरी 2002- **ज्ञानकल्याणक** - मुनिराज सन्मति को आहार दान विधि, केवलज्ञान प्राप्ति, समवशरण रचना एवं दिव्यध्वनि प्रसारण।

17 फरवरी 2002- **मोक्षकल्याणक** - पावापुरी की रचना, भगवान महावीरस्वामी को निर्वाणप्राप्ति, श्रीजी विराजमान।

देख सकें, ऐसे सार्वजनिक स्थान पर लगा देवें।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड
श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा - कार्यक्रम

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शनिवार 26 जनवरी 2002	1. बालबोध पाठमाला भाग1 (बा.प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग1(प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (बरैयाजी) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष)
रविवार 27 जनवरी 2002	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बा.द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2(प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)
सोमवार 28 जनवरी 2002	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बा.तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्धयुपाय (पूर्ण) 5. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट -

(1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें।

शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

दिल्ली एवं गुजरात यूनिवर्सिटी में डॉ. भारिल्ल

दिल्ली(खेलगाँव) यहाँ स्थित खचाखच भरे विशाल हॉल में दिगम्बर संत आचार्यश्री विद्यानन्दजी, उपाध्यायश्री गुप्तिसागरजी एवं श्वेताम्बर संत श्री शिवमुनि, श्री अमर मुनि व महेंद्र मुनि के पावन सान्निध्य में दिनांक 9 दिसम्बर 2001 को भगवान महावीरस्वामी के दीक्षाकल्याणक दिवस पर अखिल भारतवर्षीय जैनमिलन के द्वारा आयोजित सभा में राष्ट्रसंत आचार्यश्री विद्यानंदजी एवं अन्य मुनियों के उद्बोधन के साथ-साथ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर का भी भगवान महावीर के जीवन और दर्शन विषय पर अत्यंत सारगर्भित भाषण हुआ।

इस अवसर पर श्रीमती इन्दु जैन, साहू रमेशचन्दजी जैन एवं श्री निर्मलकुमारजी सेठी आदि अनेक महानुभावों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। अन्त में भगवान महावीर 2600 वाँ जन्ममहोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री दीपचन्दजी गार्डी की ओर से उपस्थित जनसमुदाय को भगवान महावीरस्वामी के बारे में डॉ. भारिल्ल द्वारा लिखित 4 पुस्तकों के 350 सैट भेंट किये गये।

अहमदाबाद (गुज.) : भगवान महावीर के दीक्षा कल्याणक के अवसर पर दिनांक 10 व 11 दिसम्बर को गुजरात युनिवर्सिटी (तत्त्वज्ञान विभाग) एवं भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव गुजरात प्रदेश समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में दो दिन का सेमिनार आयोजित किया गया, जिसके उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता गुजरात के महामहिम राज्यपाल श्री सुन्दरसिंहजी भण्डारी ने की।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का भगवान महावीर के सिद्धान्तों अहिंसा, अनेकान्त एवं शाकाहार पर अत्यन्त सारगर्भित उद्घाटन भाषण हुआ। सभा में मुख्यअतिथि के रूप में गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष श्री धीरूभाई शाह एवं जैन विश्व भारती लाडनूं (राज.) के भूतपूर्व उपकुलपति डॉ. रामजी सिंह भी उपस्थित थे। इसके अलावा विभिन्न स्थानों से आये विद्वानों ने भी 4 सत्र में समापित सेमिनार में अपने-अपने लेख पढ़े।

डॉ. हुकमचन्दभारिल्ल सेमिनार में बोलते हुये

इस अवसर पर 2600 वाँ भ. महावीर जन्ममहोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री दीपचन्दजी गार्डी की ओर से डॉ. भारिल्ल द्वारा लिखित भ. महावीर की 4 पुस्तिकाओं के 101 सैट भेंट किये गये।

इसके अतिरिक्त डॉ. भारिल्ल के नवरंगपुरा स्थित जैनमंदिर में दृष्टि के विषय पर 2 मार्मिक व्याख्यान भी हुये। इसके पूर्व ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के व्याख्यान आयोजित किये गये।

वैराग्य समाचार

1. श्री टोडरमल महाविद्यालय के भूतपूर्व छात्र डॉ. महावीरप्रसाद जैन टोकर (राज.) की माताजी श्रीमती समृतदेवी/स्व. श्री नेमीचन्दजी सलिया का स्वर्गवास 14 दिसम्बर 2001 को हो गया है। आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को 202/-रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद!

2. पुसद (महा.) के वयोवृद्ध विद्वान पण्डित श्रीकुमारजी आहाळे का देहावसान हो गया है। आप जीवनभर गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान का प्रचार-प्रसार करने के लिये टोडरमल स्मारक की ओर से प्रवचनार्थ जाते रहे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही मंगल कामना है।

औरों के दोष देख-देख कर कषायी नहीं होना।
24
महावीरस्वामी
सिंह
चिह्न
गर्भ-तिथि
जन्म-तिथि
माता
प्रमुख गणधर
स्थान
पिता
संख्या
धर्म ज्ञानचक्र
21 नेमिनाथ
20 मुनिसुव्रतनाथ
3 संभवनाथ
केवलज्ञान तिथि
प्रथम आहारदाता
स्थान
स्थान
चौबीस तीर्थंकर
पूर्वभव
वंश
निर्वाण तिथि
दीक्षा तिथि
ऊँचाई
स्थान
16 शान्तिनाथ
15 धर्मनाथ
सर्जक :
भये तीर्थंकर से चलो, तिनको नहीं चलो,
मौत नहीं टलो, तो अब क्या करिए ?
जिस पंथ चले भगवंत वही आचरिए।

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

डॉ. सुदीप जैन सम्मानित

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के प्रथम बैच के होनहार छात्र डॉ. सुदीप जैन को सर्वश्रेष्ठ सम्पादक के रूप में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सुपरिचित समाज-सेवी संस्था अहिंसा- इंटरनेशनल ने वर्ष 2000 के लिये अहिंसा इंटरनेशनल प्रेमचन्द जैन पत्रकारिता पुरस्कार से नवाजा है। यह पुरस्कार 4 नवम्बर 2001 को राजधानी नई दिल्ली के लोधी रोड इंस्टीट्यूशनल एरिया में स्थित सुप्रतिष्ठित चिन्मय मिशन सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में दिया गया।

इसप्रसंग पर उन्हें 21 हजार रुपयों के साथ-साथ माल्यार्पण, शॉल समर्पण, स्मृतिचिन्ह एवं प्रशस्ति-पत्र भी समर्पित किये गये। पुरस्कार दिल्ली उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री आर.सी. जैन ने दिया। महाविद्यालय परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई ! **- प्रबन्ध सम्पादक**

अनेक कार्यक्रम सम्पन्न

जयपुर : श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला, बड़ा मंदिर ने 5 से 12 दिसम्बर तक एक संयम सप्ताह का आयोजन किया, जिसमें 22 लोगों ने अपना समय स्वाध्याय आदि क्रियाओं में अनेक नियम एवं संयम सहित व्यतीत किया। 12 दिसम्बर को पण्डित संतोषकुमारजी झांझरी की अध्यक्षता एवं श्री कमलचन्दजी मुशरफ के मुख्यातिथ्य में एक संयम सभा का आयोजन हुआ। संचालन श्री दीपक जैन ने किया। इसीसमय पाठशाला की ग्रीष्मकालीन परीक्षा के पुरस्कार वितरित किये गये। 19 दिसम्बर को पाठशाला द्वारा गोधान मंदिर, घीवालों का रास्ता में भगवान महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया। सभी आयोजन श्री संजीवकुमारजी गोधा के निर्देशन में सम्पन्न हुये। **- श्रीमती प्रभा जैन**

धर्म प्रभावना

बिजौलिया (भीलवाड़ा) : यहाँ 24 नवम्बर से 12 दिसम्बर तक पण्डित कैलाशचन्दजी अलीगढ़ बुलन्दशहरवालों ने जैनसिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला भाग-7, समयसार, मोक्षमार्गप्रकाशक आदि ग्रन्थों के आधार से अनेक कक्षायें चलाईं।

अवश्य भेजें

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के भूतपूर्व छात्र श्री नीतेश शाह कविवर द्यानतरायजी पर शोधकार्य कर रहे हैं, जिन महानुभावों के पास द्यानतरायजी के बारे में कोई भी सामग्री हो वे निम्न पते पर भेजने का कष्ट करें।

- नीतेश शाह शास्त्री, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15

बधाई !

श्री चेतनलालजी जैन (सेठी) जयपुर की सुपुत्री का विवाह श्री मुन्नीलालजी जैन के सुपुत्र के साथ दिनांक 25 दिसम्बर 2001 को सम्पन्न हुआ। आपकी ओर से जैनपथप्रदर्शक को 150 रुपये प्राप्त हुये हैं। आपको हार्दिक बधाई !

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

मुम्बई	- 3 जनवरी 2002	विश्वविद्यालय में व्याख्यान
राजकोट	- 23 से 27 जनवरी 2002	विधान व विद्यालय उद्घाटन
गजपंथा	- 11 से 13 फरवरी 2002	पंचकल्याणक
विदिशा	- 14 से 17 फरवरी 2002	पंचकल्याणक
बरौदास्वामी	- 18 व 19 फरवरी 2002	उद्घाटन स्वाध्याय भवन
खनियांधाना	- 20 से 25 फरवरी 2002	पंचकल्याणक
दिल्ली	- 26 फरवरी से 3 मार्च 2002	पंचकल्याणक

आचार्य कुन्दकुन्द ज्ञान पहेली नं. 3 का परिणाम

जुलाई 2001 में प्रकाशित आचार्य कुन्दकुन्द ज्ञान पहेली के कुल 130 लोगों के उत्तर प्राप्त हुये हैं, जिनमें से 37 लोगों के सही उत्तर हैं। सही उत्तरदाताओं में से लकी ड्रॉ पद्धति द्वारा प्रथम पुरस्कार सौ. मंदा दिलीप चंकेश्वरा ने, द्वितीय पुरस्कार श्रीमती राजकुमारी जैन रुड़की ने और तृतीय पुरस्कार कु. निधि जैन जबलपुर ने प्राप्त किया है। सान्त्वना पुरस्कार श्रीमती इन्द्रा जैन सिंगोड़ी, श्री नरेन्द्र मोतीलाल जैन सोनगीर एवं सौ.मुन्नी जैन बेलोरा-यवतमाल ने प्राप्त किये हैं।

सभी विजेताओं को पुरस्कार राशि M.O. द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी।

अन्य सभी सही उत्तर दाताओं के नाम इसप्रकार हैं -

सौ. सुरेखा दिलीप जैन (सोनगीर), सौ. अनीता दिनेश जैन सोनगीर, श्रीमती कान्ता जैन अशोकनगर, श्रीमती कंचन जैन बैडिया, सौ. नीता सुहास दोहाडा-राशीन, सौ. हर्षा नितीनकुमार शाह मुम्बई, श्री हीरालाल व्होरा पुणे, सन्देश बाहुबली गाँधी नातेपुते, जितेन्द्र माणिकलाल दोशी फलटण, अमोल चंकेश्वरा पुणे, प्रज्ञा जैन जयपुर, मनीषकुमार जैन अहमदाबाद, उदयचन्द्र जैन अमरावती, अरुणकुमार लालोणी अशोकनगर, कुसुमप्रकाश जैन अहमदाबाद, श्रीमती सुधा बांझल गुना, सुवर्णमाला विनयकुमार दोडल हिंगोली, सौ. मंजूषा फूलचन्द मुक्किरवार हिंगोली, चन्द्रकान्ता जैन जयपुर, आशीष जैन सिंगोड़ी, उर्मिला जैन सोनगीर, शोभा मानोरिया अशोकनगर, चंदना राजकुमार यंबल हिंगोली, सौ.चलनबाई जैन बेलोरा, सौ.साधना चौधरी नई मुम्बई, कु.अर्पणा जैन ललितपुर, श्रीमती शान्ता जैन उदयपुर, प्रदीप प. दोडल हिंगोली, सौ. साधना अभयचंद यंबल हिंगोली, सौ. स्वप्ना डॉ. अक्षय दोडल हिंगोली।

ज्ञान पहेली नं. 3 के सही उत्तर

बांये से दायें - (अ) 85697481 (ऊ) 363 (ऐ) 33 (ओ) 80 (औ) 148 (क) 84 (ख) 8 (ग) 47 (घ) 22 (ङ) 11 (ज) 80 (झ) 34 (ट) 20 (ठ) 58 (ड) 1008 (ढ़) 8 (ण) 8 (थ) 6 (द) 4 (न) 42 (प) 5 (फ) 12 (ब) 36 (भ) 1

ऊपर से नीचे - (अ) 84 (आ) 63 (इ) 93 (ई) 48 (औ) 14 (अं) 14 (अ:) 12 (क) 80 (च) 13 (छ) 32 (ञ) 40 (ठ) 52 (त) 72 (ध) 26 (न) 46 ।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जनवरी (प्रथम) 2002
आई. आर. / R. J. 3002/01

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित अनुभवप्रकाश** जैनदर्शनाचार्य, एम.ए., बी.एड. एवं **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 515581, 515458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर